INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | APRIL – 2024

बैगा जनजातियों के विकास में खेल व संचार की भूमिका का अध्ययन

मनोज कुमार खरोले[1] , डॉ. भरत कुमार विश्वकर्मा[2]
[1]शोधार्थी शारीरिक शिक्षा , लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग , श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

हम 21वीं सदी में हैं, इंटरनेट युग जहाँ माऊस के एक क्लिक पर जानकारी उपलब्ध है। लेकिन हमारे समाज का एक बड़ा वर्ग, जो हमारे तथाकथित मुख्यधारा समाज का हिस्सा भी नहीं है, गहरे जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रहता है वह असंबद्ध और बुनियादी जीवन शैली सुविधाओं से वंचित है। जनजातीय लोग खेल के जनजातीय साधनों, यानी स्वदेशी उपकरणों और पारम्परिक लोक संचार तकनीकों पर अधिक निर्भर है। हालांकि यह बुरा नहीं है, लेकिन जनजातीय लोगों को आधुनिक खेल साधनों से और अधिक जुड़ने की जरूरत है। समय की माँग है कि जनजातीय समुदायों के बीच खेल तकनीकों को उन्नत किया जाए, न कि इन स्वदेशी समाजों का विकास कर सकता है और उन्हें विलुप्त होने से बचा सकता है। खेल आदिवासी समुदाय और मुख्यधारा की संस्कृति के बीच की दूरी को पाट सकता है और हमें उनकी पुरानी विरासत और सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को अपनाने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने में मदद कर सकता है।

मुख्य शब्द – जनजातियों के विकास, खेल, संचार, भूमिका, अध्ययन।

प्रस्तावना –

खेल किसी भी जीवित प्राणी, विशेषकर मनुष्य के लिए सबसे बुनियादी आवश्यकता है। यह मानवीय सम्बन्ध स्थापित करने की नींव देता है। यह एक राष्ट्र के निर्माण और समाज में वंचितों और वंचितों के बीच की खाई को पाटने में चमत्कार कर सकता है। आदिवासी समुदाय के लोग समाज का सबसे उपेक्षित हिस्सा है। उनमें से अधिकांश तथाकथित मुख्यधारा समाज का हिस्सा भी नहीं है। जीवनयापन के लिए बुनियादी सुविधाओं से वंचित जनजातीय लोगों के हितों को मजबूत करने और उनकी रक्षा करने में संचार बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है।[1] हम आधुनिक युग में है, जहाँ समस्त जानकारी कम्प्यूटर/मोबाइल पर उपलब्ध है। लेकिन अधिकांश आदिवासी समुदाय अभी भी स्वदेशी संचार के अपने तरीके का पालन कर रहे हैं। संचार के उनके पारम्परिक रूप को जनजातीय संचार कहा जा सकता है, जो अपने तरीके से अद्वितीय और उल्लेखनीय है। लेकिन समय की माँग है कि इन लोगों की स्वदेशी संचार की पारम्परिक और सांस्कृतिक विरासत की पवित्रता को परेशान किए बिना आदिवासी समाज में नई और आधुनिक संचार तकनीकों को पेश किया जाए ताकि खेल की अभिरूचि में वृद्धि की जा सके। लेकिन यह समझने से पहले कि संचार जनजातियों के जीवन में क्रांति लाने की क्षमता कैसे रखता है, यह जानना आवश्यक है कि संचार क्या है।

संचार का अर्थ –

संचार को पूर्ण अर्थ में परिभाषित करना आसान नहीं है।[2] मौन, बातचीत, नृत्य, गायन, लेखन या अभिव्यक्ति का कोई अन्य रूप सभी संचार के विभिन्न प्रकार है। इसे परिभाषित करने के लिए कई सिद्धान्तकारों और समाजशास्त्रियों ने अपने विचार दिए हैं। कुमार (2011) के अनुसार, संचार शायद समकालीन मीडिया और सांस्कृतिक अध्ययन में सबसे शिथिल रूप से परिभाषित शब्दों में से एक है। लेखक का मानना है कि यह कोई प्रक्रिया या कार्य नहीं बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक एकजुटता है। कम्यूनिकेशन इन इंडिया, 2012 कुमार ने संचार को एक मानवीय रिश्ते के रूप में परिभाषित किया है जहाँ दो या दो से अधिक व्यक्ति खुशी या दुःख जैसी भावनाओं को साझा करने, संवाद करने या एक साथ रहने के लिए एक साथ आते हैं।[3]

जनजातीय खेल का अर्थ –

जनजातीय खेल एक गतिशील प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जनजातीय समुदाय के लोग अपने भावनाओं एवं गुट की क्षमता का आदान–प्रदान करते हैं।[4] विभिन्न खेल चैनल जनजातीय लोगों को अपने दैनिक कार्य प्रभावी ढंग से करने, समुदाय के भीतर और बाहरी दुनिया में तेजी से बढ़ते मुख्यधारा के समाज में खुद को सुरक्षित रखने में मदद करते हैं। खेल के इतिहास से पता चलता है कि खेल के उपकरण और तकनीकें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों में बदलाव के साथ विकसित हुई है।

विश्लेषण –

आदिवासी लोग अपनी पैतृक जड़ों से जुड़ाव के लिए जाने जाते हैं। वे सर्वश्रेष्ठ लोग हैं जो अपने परदादाओं की परम्पराओं और रीति–रिवाजों को अपनी भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए सफलतापूर्वक संरक्षित करने के लिए जाने जाते हैं। जनजातियाँ प्रकृति प्रेमी होती हैं। वे धार्मिक प्रथाओं और मान्यताओं में दृढ़ विश्वास रखते हैं। ये मूलनिवासी संचार के प्राकृतिक तरीकों पर अधिक भरोसा करते हैं। वे अपनी क्षेत्रीय खेलों से अपने गुट की परम्परा को संरक्षित रखते हैं। उनके विचार पेंटिंग, कला, शिल्प और शिल्प के माध्यम से भी व्यक्त होते हैं। पारम्परिक टैटू अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक और तरीका है। उनका लोक संगीत और नृत्य उनकी मनोदशा और भावनाओं को दर्शाते हैं। चाहे वह नया जन्म हो या शादियाँ या मृत्यु उनके पास हर घटना और अवसर के लिए एक उत्कृष्ट कृति है।[5] आदिवासियों को खेलों की आधुनिक तकनीकें ज्यादा पसंद नहीं है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण उनके समुदाय में व्याप्त उच्च अशिक्षा और गरीबी है। ये मुददे उनके द्वारा नई और आधुनिक तकनीकों को अपनाने में गंभीर चुनौतियाँ पैदा करते हैं। जहाँ आदिवासी समुदाय के लोग खेल के लिए पारम्परिक सुविधा का अधिक उपयोग करते हैं, वहीं मुख्य धारा का समाज समाचार पत्रों, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट और अन्य आधुनिक तकनीकों का उपयोग करता है। मुख्यधारा के समाज में पारम्परिक मीडिया स्वरूप अपना महत्व खोते जा रहे हैं। यही कारण है कि कई क्षेत्रीय खेल, संगीत या नृत्य शैलियाँ विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही है। ऐसे में हमारी सांस्कृतिक विरासत को आज तक अक्षुण्ण बनाए रखने का श्रेय इन मूल निवासियों को देना गलत नहीं होगा। जनजातीय खेल की विभिन्न तकनीकें, जनजातीय भाषा से लेकर कला रूपों और जनजातीय संगीत और नृत्य तक, सभी भाारत की सांस्कृतिक पहचान का आंतरिक हिस्सा बन गई है। वे हमारे अतीत और भविष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। भारत सरकार और कई गैर लाभकारी संगठन आदिवासी कला रूपों के विकाास और संरक्षण पर सख्ती से काम कर रहे हैं क्योंकि वे समाज के लिए दर्पण के रूप मे काम करते हैं।[6] तेजी से बदलती दुनिया के साथ, नए खेल चैनल अस्तित्व में आए हैं। वर्तमान अध्ययन में, शोधकर्ता का लक्ष्य यह पता लगाना है कि पिछले कुछ वर्षों में जनजातीय खेल तकनीकें कैसे बदल गई है और जनजातीय लोगों ने बाधााओं पर काबू पाकर उन्हें कैसे अपनाया है और वे कौन से उपकरण और गतिविधियाँ हैं जो उन्हें अपने भीतर प्रभावी तरीकों को स्थापित करने में मदद कर रही हैं।

खेल हेतु संचार के तत्व –

संचार के छह मुख्य तत्व ये हैं –

1. प्रेषक (एनकोडर) – वह जो संचार आरंभ करता है।

2.संदेश – साझा या आदान प्रदान की जाने वाली जानकारी या विचार।

3. चैनल – यह वह माध्यम है जिसके माध्यम से संदेश प्रसारित होता है, उदाहरण के लिए रेडियो, समाचार पत्र, टेलीविजन आदि।
4. रिसीवर (डिकोडर) – यह वह है जो अंतिम उपयोगकर्ता है और माध्यम से भेजे गये संदेश को प्रेषक से प्राप्त करता है।
5. शोर – यह वह बाधा या रूकावट है जो भाषा, अशिक्षा, खराब लिखावट, लाउडस्पीकर आदि जैसे विभिन्न कारकों के कारण हो सकती है, जो संचार के उचित निष्पादन में समस्याएँ पैदा करती है और परिणामस्वरूप संचार अप्रभावी हो जाता है।
6. फीडबैक – यह वह चरण है जहाँ यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्राप्तकर्ता ने प्रेषक द्वारा भेजे गए संदेश को पर्याप्त रूप से प्राप्त और समझ लिया है। यह किसी विशेष संचार की शुद्धता या कुछ गलत का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करता है।

संचार के प्रकार –

संचार एक व्यापक शब्द है और इसका विस्तार व्यापक है। इसलिए संचार को वर्गीकृत करने के लिए विभिन्न आधार हैं। लेकिन प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच संदेशों के आदान–प्रदान के लिए उपयोग किए जाने वाले संचार चैनलों के आधार पर इसे मोटे तौर पर दो प्रकारों में विभाजित किया जाता है –

1. **मौखिक संचार** – यह एक प्रकार का संचार है जहाँ विचारों और सूचनाओं का आदान–प्रदान मौखिक और लिखित जैसे मौखिक तरीकों के माध्यम से भाषाई रूप से होता है। मौखिक संचार मुँह और वाणी के माध्यम से जानकारी साझा करता हैं – भाषण, व्याख्यान, प्रस्तुतियाँ, वाद विवाद, विचार विमर्श, अन्य सभी मौखिक संचार के रूप है।[7] लिखित संचार, जैसा कि नाम से पता चलता है, प्रलेखित या लिखित रूप में विचारों को साझा करता है। यद्यपि लेखन से पहले वाणी आई, परंतु लेखन अधिक विश्वसनीय, अद्वितीय एवं मान्य हैं। स्वदेशी जनजातीय समुदाय संचार के मौखिक माध्यम पर अधिक निर्भर है क्योंकि विचारों और सूचनाओं का आदान–प्रदान उनके लिए बेहतर है। जनजातीय लोग जिन मौखिक संचार विधियों में लगे हुए हैं उनमें लोकगीत, लोकसंगीत, पहेलियाँ, कहावतें, लोककथाएँ आदि शामिल हैं।

2. **गैर मौखिक संचार** – यह संचार का वह तरीका है जहाँ सूचना और विचारों को गैर भाषाई अभ्यावेदन में व्यक्त किया जाता है। सांकेतिक भाषा, चेहरे के भाव, हावभाव, शारीरिक भाषा, कालानुक्रमिक संचार, आँख से संपर्क, हैप्टिक संचार अशाब्दिक संचार के उदाहरण हैं। गैर मौखिक संचार सर्वव्यापी है। इसका मतलब है कि संचार का एक गैर मौखिक तरीका मौखिक सहित हर संचार में मौजूद है। प्रभावी संचार सुनिश्चित करने के लिए, सभी गैर मौखिक चैनल जैसे चेहरा, मौखिक माध्यम के साथ–साथ शरीर, आवाज, स्पर्श, उपस्थिति और अन्य भी जुडे हुए हैं।[8] लोक पेंटिग, आदिवासी टैटू डिजाइन, मिट्टी के बर्तन या टोकरी बनाना, सांकेतिक भाषा आदि आदिवासी लोगों के लिए संचार के गैर मौखिक तरीके हैं। संचार का एक अन्य वर्गीकरण इसमें शामिल प्रतिभागियों की शर्तो पर आधारित है। इसे मुख्य रूप से चार प्रकारों में विभाजित किया गया है।

3. **खेल हेतु अंतर्वैयक्तिक संचार** – इस प्रकार का संचार हर जीवित प्राणी के साथ और हर समय होता है। यह एक व्यक्ति के अंदर घटित होता है जहाँ संचार स्वय के भीतर होता है, अर्थात् बात करना, सुनना, सम्बन्धित होना और स्वयं को समझना। इसका परिणाम ऑटो संचार होता है जहाँ एक व्यक्ति प्रत्यक्ष संचार में शामिल होने से पहले अपने विचारों पर चिंतन, संकल्पना और निर्माण करता है। हम अपनी दैनिक दिनचर्या में हर बार पारस्परिक संचार का अनुभव कर सकते हैं, जहाँ हम संचार के किसी भी अन्य रूप को अपनाने से पहले खुद के साथ अभ्यास करते हैं। यदि हम इस प्रकार के संचार को हर परिदृश्य में सर्वव्यापी मानें तो गलत नहीं होगा।

4. **पारम्परिक संचार** – यह संचार का एक सार्वभौमिक रूप है जहाँ दो व्यक्ति अपने विचारों और विचारों का आदान–प्रदान करते है। यह आमने सामने बातचीत में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच विचारो का आदान प्रदान या साझा करता है जो औपचारिक या अनौपचारिक, मौखिक या गैर मौखिक हो सकता है।[9] पारम्परिक संचार में, भाग लेने वाले दोनों सदस्य संदेश भेज रहे हैं और प्राप्त कर रहे हैं। इसे एक प्रभावी संचार प्रणाली माना जाता है क्योंकि इसमें केवल दो पक्ष शामिल होते हैं जहाँ शोर न्यूनतम हो सकता है और तत्काल

प्रतिक्रिया स्थापित की जा सकती है। आदिवासी लोग मुख्य रूप से पारस्परिक संचार में लगे हुए हैं, जहाँ वे आमने–सामने संचार करके एक दूसरे के साथ अपनी भावनाओं और ज्ञान का आदान प्रदान करते हैं।

5. समूह संचार – यह पारस्परिक संचार का एक विस्तारित रूप है जहाँ दो से अधिक लोग एक दूसरे के साथ अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। इस प्रकार के संचार में, कई अलग–अलग कारणों से कई अलग–अलग समूह हो सकते हैं।[10] इस प्रकार के संचार का सकारात्मक परिणाम यह है कि यह प्रत्यक्ष बातचीत, आत्म अभिव्यक्ति, सामूहिक निर्णय लेने, किसी की दक्षता और प्रभाव को बढ़ाने, कई अन्य लोगों के बीच उसकी स्थिति को ऊपर उठाने का कारण बन सकता है। इस प्रकार संचार पर कुछ प्रतिबंध यह है कि यदि अधिक से अधिक लोग संचार के लिए समूह बनाने में शामिल होते हैं तो यह समय लेने वाला या अक्सर अक्षम हो सकता है। पारस्परिक संचार के बाद, समूह संचार जनजातियों के लिए संचार का माध्यम है। वे अपने समुदाय के सदस्यों के बीच संचार और जानकारी साझा करने के लिए छोटे समूहों को शामिल करते हैं।

6. जनसंचार – यह बड़े पैमाने पर दर्शकों के साथ संचार है जहाँ एक बड़ी आबादी शामिल हैं। इस प्रकार के संचार में प्रयुक्त चैनलों को जनसंचार माध्यम कहा जाता है। रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, फिल्में आदि जनसंचार माध्यम हैं, जिनका उपयोग जनसंचार करने के लिए किया जाता है। जैसा कि नाम से पता चलता है।[11] जनसंचार में संदेश प्राप्त करने के लिए बड़े दर्शक वर्ग होते हैं और प्रतिक्रिया पारस्परिक संचार से भिन्न होती है। हेरोल्ड लास्वेल (1948) के अनुसार, मास मीडिया समाज के लिए तीन मुख्य कार्य करता है, अर्थात् पर्यावरण की निगरानी, समाज के विभिन्न हिस्सों का सहसम्बन्ध और सामाजिक विरासत का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचरण। डेनिस मैक्सवेल (2000) द्वारा मोबिलाइजेशन के नाम से सूची में एक चौथी श्रेणी जोड़ी गई थी जो परिवर्तन और विकास की विशिष्ट प्रक्रियाओं में लोगों को एक साथ लाने के लिए जनसंचार माध्यमों की क्षमता को प्रदर्शित करती है। जनसंचार उपकरण जनजातीय लोगों के लिए कनेक्टिविटी, वित्तीय बाधाओं, अनभिज्ञता और अन्य जैसे कई कारकों के कारण आसानी से उपलब्ध नहीं है।

मानव खेल का विकास –

मनुष्य ने स्वयं का एक दूसरे के साथ कैसे संचार स्थापित किया, इसमें अनादि काल से विकास की एक श्रृंखला देखी गई है। 2000000 ईसा पूर्व में मानव भाषण के जन्म से लेकर 21वीं सदी के आईसीटी (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) युग के आगमन तक, मानव की संचार तकनीकों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन देखा गया है। समय के साथ मानव खेल आगे बढ़ा है।[12]

जनजातियों के बीच खेल –

भारत विभिन्न प्रकार की जनजातियों का घर है। देश की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत (भारत की जनगणना, 2011) के साथ, भारत में दुनिया में सबसे बड़े स्वदेशी लोग रहते हैं। विभिन्न प्रकार के जनजातीय लोगो की अलग–अलग प्रकार की समस्याएं होती हैं और उन पर समर्पित ध्यान देने की आवश्यकता होती है। जनजातीय समूहों के खेल पैटर्न को समझने के लिए, सूक्ष्म स्तर पर जाना और उनके समूहों के भीतर खेल की उनकी पद्धति को समझना महत्वपूर्ण है।[13] आदिवासी लोग अपने आवास, संचार तकनीक, जीवनशैली, सामाजिक और वित्तीय स्थितियों, बाहरी दुनिया के संपर्क और कई अन्य मामलों में मुख्यधारा की आबादी से भिन्न है। उन्हें हमेशा राज्यों के विकास से पहले या उसके बाहर मौजूद एक सामाजिक समूह के रूप में देखा गया है। विशिष्ट लोगों के ये समूह आजीविका के लिए मुख्य रूप से अपनी भूमि पर निर्भर है।

आदिवासी लोग काफी हद तक आत्मनिर्भर है और ज्यादातर मुख्यधारा के समाज में एकीकृत नहीं है। बल्कि उनका रहन–सहन बहुत ही सरल है। उनके पास बोलने के लिए अपनी स्थानीय भाषा है। उनके पास उच्च सांस्कृतिक और पारम्परिक मूल्य है और वे उनमें दृढ़ता से विश्वास करते हैं। उनका कपड़े पहनने और आभूषण पहनने का अपना तरीका होता है। वे जो कुछ भी करते हैं वह समूह के भीतर या बाहरी दुनिया से संवाद करने के उनके तरीके को दर्शाता है।[14] शोधकर्ताओं का मानना है कि जनजातियों और मुख्यधारा के लोगों के बीच बनी बड़ी खाई को भरने में संचार बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है। अशिक्षा, गरीबी, भाषा सम्बन्धी बाधाएं, बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच न होना जनजातियों के विकास के लिए गंभीर खतरा है। एक संचार रणनीति जो एक स्थिति में उनके लिए लागू हो सकती है वह दूसरी स्थिति में उपयुक्त नहीं हो सकती

है। जनजातीय लोगों के मामले में एक स्थान पर प्रभावी संचार माध्यम दूसरे स्थान पर प्रभावी नहीं हो सकता है।

जनजातीय खेल का अर्थ –

जनजातीय खेल एक गतिशील प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जनजातीय समुदाय के लोग अपने विचारों, संकेतों, सूचनाओं और भावनाओं का आदान प्रदान करते हैं। विभिन्न संचार चैनल जनजातीय लोगों को अपने दैनिक कार्य प्रभावी ढंग से करने, समुदाय के भीतर और बाहरी दुनिया में बातचीत करने और तेजी से बढ़ते मुख्यधारा के समाज में खुद को सुरक्षित रखने में मदद करते हैं।[15] खेल के इतिहास से पता चलता है कि खेल के उपकरण और तकनीकें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों में बदलाव के साथ विकसित हुई है। पेट्रोग्लिफस (चट्टानों पर नक्काशी) से लेकर चित्रलेख (गुफा पेंटिंग) और विचारधारा से लेकर लेखन तक, संचार में कई प्रगति देखी गई है, जिसमें सूक्ष्म विनिमय प्रक्रियाओं से लेकर सम्पूर्ण वार्तालाप और जनसंचार तक शामिल हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः मध्यप्रदेश के बैगा जनजाति के लोग राष्ट्रीय स्तर पर अपना हुनर बिखेरने में सक्षम हुए हैं। राज्य में उनकी प्रतिभा निखारने एवं संस्कृति को देश भर में बिखेरने हेतु बैगा ओलम्पिक्स का आयोजन राज्य स्तर पर किया जा रहा है। राज्य के इस आयोजनों में अनेक प्रदेशों के बैगा जनजाति के लोग सहभागी होते हैं। राज्य में विशेषकर बैगा जनजातियों के लोगों हेतु पारम्परिक उपकरणों से खेलों के महाकुम्भ का आयोजन बालाघाट जिले की बैहर तहसील के शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय के मैदान में जनवरी 2020 में आयोजित किया गया था। इसमें छत्तीसगढ़ के राजनाद गाँव, कांकेर, बिलासपुर, बस्तर, कवची, झारखण्ड के राची एवं धनबाद एवं आन्ध्रप्रदेश के आन्दित्याबाद, महाराष्ट्र प्रान्त के भण्डारा, गढ़ बिरौली, गोडिया तथा वर्धा जिले में रहने वाली बैगा जनजातियों ने बढ़–बढ़कर हिस्सा लिया। इस ओलम्पिक्स में बैगा जनजातियों के पारम्परिक खेलों के रस्साकसी, बोरादौड़, शिकार के खेल धनुषबाढ़, मटकादौड़, कुश्ती, खो–खो, बालीबाल, कबड्डी इत्यादि प्रतियोगिताओं को सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त रात्रि में बैगा जनजाति के लोगों ने अपने पारम्परिक नृत्यों को प्रस्तुत कर अपनी संस्कृति को सभी क्षेत्रों में बिखेरने का प्रयास किया। इसके साथ ही बैगा जनजाति के पारम्परिक व्यंजनों का रसास्वादन करने का मौका भी मिला। बैगा जनजातियों के बैगा ओलम्पिक्स के आयोजन शुभ अवसर पर एअरों स्पोर्ट्स एवं एंबुवेच्चर स्पोर्ट्स का सफल आयोजन किया जाता है। इस आयोजन में बालाघाट पर्यटन काउन्सिल, आदिवासी विकास विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही सांस्कृतिक विभाग भी अपना पूर्णतः सहयोग प्रदान करता है।

संदर्भ –

[1] चौरसिया, डॉ. विजय (2013–14) – बैगा जनजाति में जन्म संस्कार, चौमासा (आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल का प्रकाशन), अंक 93, वर्ष 30, नवम्बर 2013–फरवरी 2014

[2] पाण्डेय, डॉ. बंशीधर एवं गुप्ता, डॉ. निमिषा (2014) – मानव समाज और व्यावसायिक समाज कार्य, पोद्दार पब्लिकेशन, वाराणसी

[3] मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ (2004) – भारतीय समाज एवं संस्कृति, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली

[4] गोस्वामी, डॉ. चित्रा (2014) – ग्रामीण भारत की विकलांगता स्थिति विकास (बिलासपुर), वर्ष अष्टम, अंक 31, जुलाई–अगस्त, सितम्बर 2014, पृष्ठ 27

[5] पाठक, डॉ. विनय कुमार (2014) – हमारी आदिवासी अस्मिता, चौमासा (आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश परिषद भोपाल का प्रकाशन), अंक 96, वर्ष 32, मार्च–जून 2014

[6] सिंह, बी.पी. (2004) – म.प्र. की गौड़ जनजाति का सांस्कृतिक परिदृश्य, बुलेटिन संयुक्ता 41, आदिम जाति शोध संस्थान, भोपाल

[7] क्षत्रिय, मालती सिंह (2014) – ददरिया गीतों में नायिका, चौमासा (आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश परिषद, भोपाल का प्रकाशन), अंक 97, वर्ष 31, नवम्बर 2014–फरवरी 2015

[8] चौरसिया, डॉ. विजय (2015) – बैगा जनजाति में वैवाहिक संस्कार, चौमासा (आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश परिषद भोपाल का प्रकाशन), अंक 98–99, वर्ष 32, जुलाई–अक्टूबर 2015 एवं नवम्बर–फरवरी 2016

[9] कुशवाहा, डॉ. जिमी सिंह, सिंह, डॉ. उमेश कुमार एवं जैन, डॉ. अरिहंत (2016) – जनजातियों में शिक्षा की स्थिति, एस.एस.डी.एन. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

[10] शर्मा, डॉ. सुनीता (2017) – आदिम कला में सौन्दर्यानुभूति, Souvenir National Seminar on Tangible and Intangible Heritage of Adivasi Culture in Central India Continuity and Change 15 & 16 September 2017 [Organised by Dept.-of Trible Studies] IGNTU, Amarkantak.

[11] छिल्लर, डॉ. सुशील कुमार (2017) – भारत में जनजातीय समाज, राहुल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ उत्तरप्रदेश

[12] चौरसिया, डॉ. विजय (2014) – प्रकृति पुत्र बैगा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

[13] मोहम्मद, प्रो. शरीफ (2017) – कर्मा नृत्य रचना (भोपाल), अंक–129, नवम्बर–दिसम्बर 2017, पृष्ठ 50–60

[14] तिवारी, शिवकुमार (2005) – मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

[15] कस्करे, गरीबीन (2018) – मध्यप्रदेश के जनजातियों की परम्पराएँ, आवोन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली